एस्तेर

महारानी वशती द्वारा राजा की आज्ञा का उल्लंघन

1 यह उन दिनों की बात है जब क्षयर्ष नाम का राजा
राज्य किया करता था। भारत से लेकर कूश के
एक सौ सत्ताईस प्रांतों पर उसका राज्य था। 2महाराजा
क्षयर्ष, शूशन नाम की नगरी, जो राजधानी हुआ करती
थी, में अपने सिंहासन से शासन चलाया करता था।
3अपने शासन के तीसरे वर्ष क्षयर्ष ने अपने
अधिकारियों और मुखियाओं को एक भोज दिया। फारस
और मादै के सेना नायक और दूसरे महत्वपूर्ण मुखिया
उस भोज में मौजूद थे। 4यह भोज एक सौ अस्सी दिन
तक चला। इस समय के दौरान महाराजा क्षयर्ष अपने
राज्य के विपुल वैभव का लगातार प्रदर्शन करता रहा।
वह हर किसी को अपने महल की सम्पत्ति और उसका
भव्य सौन्दर्य दिखाता रहा। 5उसके बाद जब एक सौ
अस्सी दिन का यह भोज समाप्त हुआ तो, महाराजा
क्षयर्ष ने एक और भोज दिया जो सात दिन तक चला।
इस भोज का आयोजन महल के भीतरी बगीचे में किया
गया था। भोज में शूशन राजधानी नगरी के सभी लोगों
को बुलाया गया था। इनमें महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण और
जिनका कोई भी महत्व नहीं था, ऐसे साधारण लोग भी
बुलाये गये थे। 6उसके भीतरी बगीचे में सफेद और
नीले रंग के कपड़े, कमरे के चारों ओर लगे थे। उन
कपड़ों को सफेद सूत और बैंगनी रंग की डोरियों से
चाँदी के छल्लो और संगमरमर के खम्भों पर टाँका
गया था। वहाँ सोने और चाँदी की चौकियाँ थीं। ये चौकियाँ
लाल और सफेद रंग की ऐसी स्फटिक की भूमितल में
जड़ी हुई थीं जिसमें संगमरमर, प्रकेलास, सीप और दूसरे
मूल्यवान पत्थर जड़े थे। 7सोने के प्यालों में दाखमधु
परोसा गया था। हर प्याला एक दूसरे से अलग था। वहाँ
राजा का दाखमधु पर्याप्त मात्रा में था। कारण यह था
कि वह राजा बहुत उदार था। 8महाराजा ने अपने
सेवकों को आज्ञा दे रखी थी कि हर किसी मेहमान को,
जितना दाखमधु वह चाहे, उतनी दिया जाये और दाखमधु
परोसने वालों ने राजा के आदेश का पालन किया था।
9राजा के महल में ही महारानी वशती ने भी स्त्रियों
को एक भोज दिया।
10-11भोज के सातवें दिन महाराजा क्षयर्ष दाखमधु
पीने के कारण मग्न था। उसने उन सात खोजों को
आज्ञा दी जो उसकी सेवा किया करते थे। इन खोजों
के नाम थे: महूमान, बिजता, हबौना, बिगता, अबगता,
जेतेर और कर्कस। उन सातों खोजों को महाराजा ने
आज्ञा दी कि वे राजमुकुट धारण किये हुए महारानी
वशती को उसके पास ले आयें। उसे इसलिए आना
था कि वह मुखियाओं और महत्वपूर्ण लोगों को अपनी
सुन्दरता दिखा सके। वह सचमुच बहुत सुन्दर थी।
12किन्तु उन सेवकों ने जब राजा के आदेश की बात
महारानी वशती से कही तो उसने वहाँ जाने से मना कर
दिया। इस पर वह राजा बहुत क्रोधित हुआ। 13-14यह
एक परम्परा थी कि राजा को नियमों और दण्ड के बारे
में विद्वानों की सलाह लेनी होती थी। सो महाराजा क्षयर्ष
ने नियम को समझने वाले बुद्धिमान पुरुषों से बातचीत
की। ये ज्ञानी पुरुष महाराजा के बहुत निकट थे। इनके
नाम थे: कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना
और ममूकान। ये सातों फारस और मादै के बहुत
महत्वपूर्ण अधिकारी हुआ करते थे। इनके पास राजा से
मिलने का विशेष अधिकार था। राज्य में ये अत्यन्त
उच्च अधिकारी थे। 15राजा ने उन लोगों से पूछा, "महारानी
वशती के साथ क्या किया जाये? इस बारे में नियम क्या
कहता है? उसने महाराजा क्षयर्ष की उस आज्ञा को मानने
से मना कर दिया जिसे खोजे उसके पास ले गये थे।"
16इस पर अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में महाराजा
से ममूकान ने कहा, "महारानी वशती ने अपराध किया

है। महारानी ने महाराजा के साथ-साथ सभी मुखियाओं और महाराजा क्षयर्ष के सभी प्रदेशों के लोगों के विरुद्ध अपराध किया है। 17मैं ऐसा इसलिये कहता हूँ कि दूसरी स्त्रियाँ जो महारानी वशती ने किया है, उसे जब सुनेंगी तो वे अपने पतियों की आज्ञा मानना बंद कर देंगी। वे अपने पतियों से कहेंगी, 'महाराजा क्षयर्ष ने महारानी वशती को अपने पास लाने की आज्ञा दी थी किन्तु उसने आने से मना कर दिया।'"

18"आज फारस और मादै के मुखियाओं की पत्नियों ने, रानी ने जो किया था, सुन लिया है और देखो अब वे स्त्रियाँ भी जो कुछ महारानी ने किया है, उससे प्रभावित होंगी। वे स्त्रियाँ राजाओं के महत्वपूर्ण मुखियाओं के साथ वैसा ही करेंगी और इस तरह बहुत अधिक अनादर और क्रोध फैल जायेगा।

19"सो यदि महाराजा को अच्छा लगे तो एक सुझाव यह है: महाराजा को एक राज-आज्ञा देनी चाहिए और उसे फारस तथा मादै के नियम में लिख दिया जाना चाहिए फारस और मादै का नियम बदला तो जा नहीं सकता है। राजा की आज्ञा यह होनी चाहिये कि महाराजा क्षयर्ष के सामने वशती अब कभी न आये। साथ ही महाराजा को रानी का पद भी किसी ऐसी स्त्री को दे देना चाहिए जो उससे उत्तम हो। 20फिर जब राजा की यह आज्ञा उसके विशाल राज्य के सभी भागों में घोषित की जायेगी तो सभी स्त्रियाँ अपने पतियों का आदर करने लगेंगी। महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण और साधारण से साधारण सभी स्त्रियाँ अपने पतियों का आदर करने लगेंगी।"

21इस सुझाव से महाराजा और उसके बड़े-बड़े अधिकारी सभी प्रसन्न हुए। सो महाराजा क्षयर्ष ने वैसा ही किया जैसा ममूकान ने सुझाया था। 22महाराजा क्षयर्ष ने अपने राज्य के सभी भागों में पत्र भिजवा दिये। हर प्रांत में जो पत्र भेजा गया, वह उसी प्रांत की भाषा में लिखा गया था। हर जाति में उसने वह पत्र भिजवा दिया। यह पत्र उनकी अपनी भाषा में ही लिखे गये थे। जन सामान्य की भाषा में उन पत्रों में घोषित किया गया था कि अपने-अपने परिवार का हर व्यक्ति शासक है।

एस्तेर महारानी बनायी गयी

2 आगे चलकर महाराजा क्षयर्ष का क्रोध शांत हुआ सो उसे वशती और वशती के कार्य याद आने लगे। वशती के बारे में उसने जो आदेश दिया था, वह भी उसे याद आया। 2इसके बाद राजा के निजी सेवकों ने उसे एक सुझाव दी। उन्होंने कहा, "राजा के लिए सुंदर कुँवारी कन्याओं की खोज करो। 3राजा को अपने राज्य के हर प्रांत में एक मुखिया का चुनाव करना चाहिए। फिर उन मुखियाओं को चाहिए कि वे हर कुँवारी कन्या को शूशन के राजधानी नगर में लेकर आयें। उन कन्याओं को राजा की स्त्रियों के समूह में रखा जाये। वे हेगे की देख-रेख में रखी जायेंगी। हेगे महाराजा का खोजा था, वह स्त्रियों का प्रबंधक था। फिर उन्हें सौन्दर्य प्रसाधन दिये जायें। 4फिर वह लड़की जो राजा को भाये, वशती के स्थान पर राजा की नई महारानी बना दी जाये।" राजा को यह सुझाव बहुत अच्छा लगा। सो उसने इसे स्वीकार कर लिया।

5अब देखो, बिन्यामीन परिवार समूह का मोर्दकै नाम का एक यहूदी वहाँ रहा करता था। जो शूशन राजधानी नगर का निवासी था। मोर्दकै याईर का पुत्र था और याईर शिमी का पुत्र था और शिमी कीश का पुत्र था। शूशन राजधानी नगर में रहता था। 6उस को यरूशलेम से बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर बंदी बना कर ले गया था। वह यहूदा के राजा यकोन्याह के साथ उस दल में था जिसे बंदी बना लिया गया था। 7मोर्दकै के हदस्सा नाम की एक रिश्ते में बहन थी। वह अनाथ थी। न उसके बाप था, न माँ। सो मोर्दकै उसका ध्यान रखता था। मोर्दकै ने उसके माँ-बाप के मरने के बाद उसे अपनी बेटी के रूप में गोद ले लिया था। हदस्सा का नाम एस्तेर भी था। एस्तेर का मुख और उसकी शरीर रचना बहुत सुंदर थी।

8जब राजा का आदेश सुनाया गया तो शूशन के राजधानी नगर में बहुत सी लड़कियों को लाया गया और उन्हें हेगे की देखभाल में रख दिया गया। एस्तेर इन्हीं लड़कियों में से एक थी। एस्तेर को राजा के महल में ले जाकर हेगे की देखभाल में रख दिया गया। हेगे राजा के रनवास का अधिकारी था। 9हेगे को एस्तेर बहुत अच्छी लगी। वह उसकी कृपा पात्र बन गयी। सो हेगे ने एस्तेर को शीघ्र ही सौन्दर्य उपचार दिये और उसे विशेष भोजन प्रदान किया। हेगे ने राजा के महल से सात दासियाँ चुनीं और उन्हें एस्तेर को दे दिया। और इसके बाद हेगे ने एस्तेर और उसकी सातों दासियों को जहाँ राजघराने की स्त्रियाँ रहा करती थी, वहाँ एक उत्तम स्थान में भेज दिया। 10एस्तेर ने यह बात किसी को नहीं बताई कि वह

एक यहूदी है। क्योंकि मोर्दकै ने उसे मना कर दिया था, इसलिए उसने अपने परिवार की पृष्ठभूमि के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। 11मोर्दकै जहाँ रनवास की स्त्रियाँ रहा करती थीं, वहाँ आसपास और आगे पीछे घूमा करता था। वह यह पता लगाना चाहता था कि एस्तेर कैसी है और उसके साथ क्या कुछ घट रहा है? इसीलिये वह ऐसा करता था।

12इससे पहले कि राजा क्षयर्ष के पास ले जाने के लिये किसी लड़की की बारी आती, उसे यह सब करना पड़ता था। बारह महीने तक उसे सौन्दर्य उपचार करना पड़ता था यानी छ: महीने तक उसे गंधरस का तेल लगाया जाता और छ: महीने तक सुगंधित द्रव्य और तरह–तरह की प्रसाधन सामग्रियों का उपयोग करना होता था। 13राजा के पास जाने के लिये उन्हें यह सब करना होता था। रनवास से जो कुछ वह चाहती, उसे दिया जाता। 14शाम के समय वह लड़की राजा के महल में जाती और प्रात:काल रनवास के किसी दूसरे क्षेत्र में वह लौट आती। फिर उसे शाशगज नाम के व्यक्ति की देखरेख में रख दिया जाता। शाशगज राजा का खोजा था जो राजा की रखैलों का अधिकारी था। यदि राजा उससे प्रसन्न न होता, तो वह लड़की फिर कभी राजा के पास न जाती। और यदि राजा उससे प्रसन्न होता तो उसे राजा नाम लेकर वापस बुलाता।

15जब एस्तेर की राजा के पास जाने बारी आई तो उसने कुछ नहीं पूछा। उसने राजा के खोजे, हेगे से, जो रनवास का अधिकारी था, बस यह चाहा कि वह उसे बता दे कि वह अपने साथ क्या ले जाये? एस्तेर वह लड़की थी जिसे मोर्दकै ने गोद ले लिया था और जो उसके चाचा अबीहैल की पुत्री थी। एस्तेर को जो भी देखता, उसे पंसद करता था। 16सो एस्तेर को महाराजा क्षयर्ष के महल में ले जाया गया। यह उस समय हुआ जब उसके राज्यकाल के सातवें वर्ष का तेबेत नाम का दसवाँ महीना चल रहा था।

17राजा ने एस्तेर को किसी भी और लड़की से अधिक प्रेम किया और वह उसकी कृपा पायी। किसी भी दूसरी लड़की से अधिक, राजा को वह भा गयी। सो राजा क्षयर्ष ने एस्तेर के सिर पर मुकुट पहना कर वशती के स्थान पर नयी महारानी बना लिया। 18एस्तेर के लिए राजा ने एक बहुत बड़ी भोज दी। यह भोज उसके महत्वपूर्ण व्यक्तियों और मुखियाओं के लिये थी। उसने सभी प्रांतों में छुट्टी की घोषणा कर दी। उसने लोगों को उपहार भिजवायें क्योंकि वह बहुत उदार था।

मोर्दकै को एक बुरी योजना का पता चला

19मोर्दकै उस समय राजद्वार के निकट ही बैठा था, जब दूसरी बार लड़कियों को इकट्ठा किया गया था। 20एस्तेर ने अभी भी इस रहस्य को छुपाया हुआ था कि वह एक यहूदी थी। अपने परिवार की पृष्ठभूमि के बारे में उसने किसी को कुछ नहीं बताया था, क्योंकि मोर्दकै ने उसे ऐसा करने से रोक दिया था। वह मोर्दकै की आज्ञा का अब भी वैसे ही पालन करती थी, जैसे वह तब किया करती थी, जब वह मोर्दकै की देख–रेख में थी।

21उसी समय जब मोर्दकै राजद्वार के निकट बैठा करता था, यह घटना घटी: बिकतान और तेरेश जो राजा के द्वार रक्षक अधिकारी थे, राजा से अप्रसन्न हो गये थे। उन्होंने राजा क्षयर्ष की हत्या का षड़यन्त्र रचना शुरु कर दिया। 22किन्तु मोर्दकै को उस षड़यन्त्र का पता चल गया और उसने उसे महारानी एस्तेर को बता दिया। फिर महारानी एस्तेर ने उसे राजा से कह दिया। उसने राजा को यह भी बता दिया कि मोर्दकै ही वह व्यक्ति है, जिसने इस षड़यन्त्र का पता चलाया है। 23इसके बाद उस सूचना की जाँच की गयी और यह पता चला कि मोर्दकै की सूचना सही थी और उन दो पहरेदारों को जिन्होंने राजा को मार डालने का षड़यन्त्र बनाया था, एक खम्भे पर लटका दिया गया। राजा के सामने ही ये सभी बातें राजा के इतिहास की पुस्तक में लिख दी गयीं।

यहूदियों के विनाश के लिये हामान की योजना

3 इन बातों के घटने के बाद महाराजा क्षयर्ष ने हामान का सम्मान किया। हामान अगागी हम्मदाता नाम के व्यक्ति का पुत्र था। महाराजा ने हामान की पदोन्नति कर दी और उसे दूसरे मुखियाओं से अधिक बड़ा, महत्वपूर्ण और आदर का पद दे दिया। 2राजा के द्वार पर महाराजा के सभी मुखिया हामान के आगे झुक कर उसे आदर देने लगे। वे महाराजा की आज्ञा के अनुसार ही ऐसा किया करते थे। किन्तु मोर्दकै ने हामान के आगे झुकने अथवा उसे आदर देने को मना कर दिया। 3इस पर राजा के द्वार के अधिकारियों ने मोर्दकै से पूछा, "तुम हामान के आगे

झुकने की अब महाराजा की आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते?"

4राजा के वे अधिकारी प्रतिदिन मोर्दकै से ऐसा कहते रहे। किन्तु वह हामान के आगे झुकने के आदेश को मानने से इन्कार करता रहा। सो उन अधिकारियों ने हामान से इसके बारे में बता दिया। वे ये देखना चाहते थे कि हामान मोर्दकै का क्या करता है? मोर्दकै ने उन अधिकारियों को बता दिया था कि वह एक यहूदी था। 5हामान ने जब यह देखा कि मोर्दकै ने उसके आगे झुकने और उसे आदर देने को मना कर दिया है तो उसे बहुत क्रोध आया। 6हामान को यह पता तो चल ही चुका था कि मोर्दकै एक यहूदी है। किन्तु वह मोर्दकै की हत्या मात्र से संतुष्ट होने वाला नहीं था। हामान तो यह भी चाहता था कि वह कोई एक ऐसा रास्ता ढूंढ़ निकाले जिससे क्षयर्ष के समूचे राज्य के उन सभी यहूदियों को मार डाले जो मोर्दकै के लोग हैं।

7महाराजा क्षयर्ष के राज्य के बारहवें वर्ष में नीसान नाम के पहले महीनें में विशेष दिन और विशेष महीने चुनने के लिये हामान ने पासे फेंके और इस तरह अदार नाम का बारहवाँ महीना चुन लिया गया। (उन दिनों लाटरी निकालने के ये पासे, "पुर" कहलाया करते थे।) 8फिर हामान महाराजा क्षयर्ष के पास आया और उससे बोला, "हे महाराजा क्षयर्ष तुम्हारे राज्य के हर प्रान्त में लोगों के बीच एक विशेष समूह के लोग फैले हुए हैं। ये लोग अपने आप को दूसरे लोगों से अलग रखते हैं। इन लोगों के रीतिरिवाज भी दूसरे लोगों से अलग हैं और ये लोग राजा के नियमों का पालन भी नहीं करते हैं। ऐसे लोगों को अपने राज्य में रखने की अनुमति देना महाराज के लिये अच्छा नहीं है।

9"यदि महाराज को अच्छा लगे तो मेरे पास एक सुझाव है: उन लोगों को नष्ट कर डालने के लिये आज्ञा दी जाये। इसके लिये मैं महाराज के कोष में दस हजार चाँदी के सिक्के जमा कर दूँगा। यह धन उन लोगों को भुगतान के लिये होगा जो इस काम को करेंगे।"

10इस प्रकार महाराजा ने राजकीय अंगूठी अपनी अंगुली से निकाली और उसे हामान को सौंप दिया। हामान अगागी हम्मदाता का पुत्र था। वह यहूदियों का शत्रु था। 11इसके बाद महाराजा ने हामान से कहा, "यह धन अपने पास रखो और उन लोगों के साथ जो चाहते हो, करो।"

12फिर उस पहले महीने के तेरहवें दिन महाराजा के सचिवों को बुलाया गया। उन्होंने हामान के सभी आदेशों को हर प्रांत की लिपि और विभिन्न लोगों की भाषा में अलग-अलग लिख दिया। साथ ही उन्होंने उन आदेशों को प्रत्येक कबीले के लोगों की भाषा में भी लिख दिया। उन्होंने राजा के मुखियाओं, विभिन्न प्रांतों के राज्यपालों, अलग अलग कबीलों के मुखियाओं के नाम पत्र लिख दिये। ये पत्र उन्होंने स्वयं महाराजा क्षयर्ष की ओर से लिखे थे और आदेशों को स्वयं महाराजा की अपनी अंगूठी से अंकित किया गया था।

13संदेशवाहक राजा के विभिन्न प्रांतों में उन पत्रों को ले गये। इन पत्रों में सभी यहूदियों के सम्पूर्ण विनाश, हत्या, और बर्बादी के राज्यादेश थे। इसका आशा था कि युवा, वृद्ध, स्त्रियाँ और नन्हें बच्चे तक समाप्त कर दिये जायें। आज्ञा यह थी कि सभी यहूदियों को बस एक ही दिन मौत के घाट उतार दिया जाये। वह दिन था अदार नाम के बारहवें महीने की तेरहवीं तारीख़ को था और यह आदेश भी दिया गया था कि यहूदियों के पास जो कुछ भी हो, उसे ले लिया जाये।

14इन पत्रों की प्रतियाँ उस आदेश के साथ एक नियम के रूप में दी जानी थीं। हर प्रांत में इसे एक नियम बनाया जाना था। राज्य में बसी प्रत्येक जाति के लोगों में इसकी घोषणा की जानी थी, ताकि वे सभी लोग उस दिन के लिये तैयार रहें। 15महाराजा की आज्ञा से संदेश वाहक तुरन्त चल दिये। राजधानी नगरी शूशन में यह आज्ञा दे दी गयी। महाराजा और हामान तो दाखमधु पीने के लिए बैठ गये किन्तु शूशन नगर में घबराहट फैल गयी।

सहायता के लिये एस्तेर से मोर्दकै की विनती

4 मोर्दकै ने, जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में सब कुछ सुना। जब उसने यहूदियों के विरुद्ध राजा की आज्ञा सुनी तो अपने कपड़े फाड़ लिये। उसने शोक वस्त्र धारण कर लिये और अपने सिर पर राख डाल ली। वह ऊँचे स्वर में विलाप करते हुए नगर में निकल पड़ा। 2किन्तु मोर्दकै बस राजा के द्वार तक ही जा सका क्योंकि शोक वस्त्रों को पहन कर द्वार के भीतर जाने की आज्ञा किसी को भी नहीं थी। 3हर किसी प्रांत में जहाँ कहीं भी राजा का यह आदेश पहुँचा, यहूदियों में रोना-धोना और शोक फैल गया। उन्होंने खाना छोड़ दिया और वे ऊँचे

स्वर में विलाप करने लगे। बहुत से यहूदी शोक वस्त्रों को धारण किये हुए और अपने सिरों पर राख डाले हुए धरती पर पड़े थे।

4एस्तेर की दासियों और खोजों ने एस्तेर के पास जाकर उसे मौर्दकै के बारे में बताया। इससे महारानी एस्तेर बहुत दुःखी और व्याकुल हो उठी। उसने मोर्दकै के पास शोक वस्त्रों के बजाय दूसरे कपड़े पहनने को भेजे। किन्तु उसने वे वस्त्र स्वीकार नहीं किये। 5इसके बाद एस्तेर ने हताक को अपने पास बुलाया। हताक एक ऐसा खोजा था जिसे राजा ने उसकी सेवा के लिये नियुक्त किया था। एस्तेर ने उसे यह पता लगाने का आदेश दिया कि मोर्दकै को क्या व्याकुल बनाये हुए है और क्यों? 6सो हताक नगर के उस खुले मैदान में गया जहाँ राजद्वार के आगे मोर्दकै मौजूद था। 7वहाँ मोर्दकै ने हताक से, जो कुछ हुआ था, सब कह डाला। उसने हताक को यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों की हत्या के लिये राजा के कोष में कितना धन जमा कराने का वादा किया है। 8मोर्दकै ने हताक को यहूदियों की हत्या के लिये राजा के आदेश पत्र की एक प्रति भी दी। वह आदेश पत्र शूशन नगर में हर कहीं भेजा गया था। मोर्दकै यह चाहता था कि वह उस पत्र को एस्तेर को दिखा दे और हर बात उसे पूरी तरह बता दे और उसने उससे यह भी कहा कि वह एस्तेर को राजा के पास जाकर मोर्दकै और उसके अपने लोगों के लिये दया की याचना करने को प्रेरित करे।

9हताक एस्तेर के पास लौट आया और उसने एस्तेर से मोर्दकै ने जो कुछ कहने को कहा था, सब बता दिया।

10फिर एस्तेर ने मोर्दकै को हताक से यह कहला भेजा: 11"मोर्दकै, राजा के सभी मुखिया और राजा के प्रांतों के सभी लोग यह जानते हैं कि किसी भी पुरुष अथवा स्त्री के लिए राजा का बस यही एक नियम है कि राजा के पास बिना बुलाये जो भी जाता है, उसे प्राण दण्ड दिया जाता है। इस नियम का पालन बस एक ही स्थिति में उस समय नहीं किया जाता था जब राजा अपने सोने के राजदण्ड को उस व्यक्ति की ओर बढ़ा देता था। यदि राजा ऐसा कर देता तो उस व्यक्ति के प्राण बच जाते थे किन्तु मुझे तीस दिन हो गये हैं और राजा से मिलने के लिये मुझे नहीं बुलाया गया है।"

12-13इसके बाद एस्तेर का सन्देश मोर्दकै के पास पहुँचा दिया गया। उस सन्देश को पा कर मोर्दकै ने उसे वापस उत्तर भेजा: "एस्तेर, ऐसा मत सोच कि तू बस राजा के महल में रहती है इसीलिए बच निकलने वाली एकमात्र यहूदी होगी। 14यदि अभी तू चुप रहती है तो यहूदियों के लिए सहायता और मुक्ति तो कहीं और से आ ही जायेगी किन्तु तू और तेरे पिता का परिवार सभी मार डाले जायेंगे और कौन जानता है कि तू किसी ऐसे ही समय के लिये महारानी बनाई गयी हो, जैसा समय यह है।"

15-16इस पर एस्तेर ने मोर्दकै को अपना यह उत्तर भिजवाया: "मोर्दकै, जाओ और जाकर सभी यहूदियों को शूशन नगर में इकट्ठा करो और मेरे लिये उपवास रखो। तीन दिन और तीन रात तक न कुछ खाओ और न कुछ पिओ। तेरी तरह मैं भी उपवास रखूँगी और साथ ही मेरी दासियाँ भी उपवास रखेंगी। हमारे उपवास रखने के बाद मैं राजा के पास जाऊँगी। मैं जानती हूँ कि यदि राजा मुझे न बुलाए तो उसके पास जाना नियम के विरुद्ध है किन्तु चाहे मैं मर ही क्यों न जाऊँ, मेरी हत्या ही क्यों न कर दी जाये, जैसे भी बन पड़ेगा, ऐसा करूँगी।"

17इस प्रकार मोर्दकै वहाँ से चला गया और एस्तेर ने उससे जैसा करने को कहा था उसने सब कुछ वैसा ही किया।

एस्तेर की राजा से विनती

5 तीसरे दिन एस्तेर ने अपने विशेष वस्त्र पहने और राज महल के भीतरी भाग में जा खड़ी हुई। यह स्थान राजा की बैठक के सामने था। राजा दरबार में अपने सिंहासन पर बैठा था। राजा उसी ओर मुँह किये बैठा था जहाँ से लोग सिंहासन के कक्ष की ओर प्रवेश करते थे। 2राजा ने महारानी एस्तेर को वहाँ दरबार में खड़े देखा। उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसकी ओर अपने हाथ में थामें हुए सोने के राजदण्ड को आगे बढ़ा दिया। इस प्रकार एस्तेर ने उस कमरे में प्रवेश किया और वह राजा के पास चली गयी और उसने राजा के सोने के राजदण्ड के सिर को छू दिया।

3इसके बाद राजा ने उससे पूछा, "महारानी एस्तेर, तुम बेचैन क्यों हो? तुम मुझसे क्या चाहती हो? तुम जो चाहो मैं तुम्हें वही दूँगा। यहाँ तक कि अपना आधा राज्य तक, मैं तुम्हें दे दूँगा।"

4एस्तेर ने कहा, "मैंने आपके और हामान के
लिये एक भोज का आयोजन किया है। क्या आप
और हामान आज मेरे यहाँ भोज में पधारेंगे?"

5इस पर राजा ने कहा, "हामान को तुरंत बुलाया
जाये ताकि एस्तेर जो चाहती है, हम उसे पूरा कर सकें।"

महाराजा और हामान एस्तेर ने उनके लिये जो
भोज आयोजित की थी, उसमें आ गये। 6जब वे दाखमधु
पी रहे थे तभी महाराजा ने एस्तेर से फिर पूछा, "एस्तेर,
कहो अब तुम क्या माँगना चाहती हो? कुछ भी माँग
लो, मैं तुम्हें वही दे दूँगा। कहो तो वह क्या है जिसकी
तुम्हें इच्छा है? तुम्हारी जो भी इच्छा होगी, वही मैं
तुम्हें दूँगा। अपने राज्य का आधा भाग तक।"

7एस्तेर ने कहा, "मैं यह माँगना चाहती हूँ। 8यदि
मुझे महाराज अनुमति दें और यदि जो मैं चाहूँ, वह
मुझे देने से महाराज प्रसन्न हों तो मेरी इच्छा यह है
कि महाराज और हामान कल मेरे यहाँ आयें। कल
मैं महाराजा और हामान के लिये एक और भोज देना
चाहती हूँ और उसी समय में यह बताऊँगी कि वास्तव
में मैं क्या चाहती हूँ।"

मोर्दकै पर हामान का क्रोध

9उस दिन हामान राजमहल से अत्यधिक प्रसन्नचित्त हो
कर विदा हुआ। किन्तु जब उसने राजा के द्वार पर मोर्दकै
को देखा तो उसे मोर्दकै पर बहुत क्रोध आया। हामान मोर्दकै
को देखते ही क्रोध से पागल हो उठा क्योंकि जब हामान
वहाँ से गुजरा तो मोर्दकै ने उसके प्रति कोई आदर भाव
नहीं दिखाया। मोर्दकै को हामान का कोई भय नहीं था,
और इसी से हामान क्रोधित हो उठा था। 10 किन्तु हामान ने
अपने क्रोध पर काबू किया और घर चला गया। इसके बाद
हामान ने अपने मित्रों और अपनी पत्नी जेरेश को एक
साथ बुला भेजा। 11वह अपने मित्रों के आगे अपने धन और
अनेक पुत्रों के बारे में डींग मारते हुए यह बताने लगा कि
राजा उसका किस प्रकार से सम्मान करता है। वह बढ़ा
चढ़ा कर यह भी बताने लगा कि दूसरे सभी हाकिमों से
राजा ने किस प्रकार उसे और अधिक ऊँचे पद पर पदोन्नति
दी है। 12"इतना ही नहीं" हामान ने यह भी बताया। "एक
मात्र मैं ही ऐसा व्यक्ति हूँ जिसे महारानी एस्तेर ने अपने भोज
में राजा के साथ बुलाया था और महारानी ने मुझे कल फिर
राजा के साथ बुला भेजा था। 13किन्तु मुझे इन सब बातों से
सचमुच कोई प्रसन्नता नहीं है। वास्तव में मैं उस समय
तक प्रसन्न नहीं हो सकता जब तक राजा के द्वार पर
मैं उस यहूदी मोर्दकै को बैठे हुए देखता हूँ।"

14इस पर हामान की पत्नी जेरेश और उसके मित्रों
ने उसे एक सुझाव दिया। वे बोले, "किसी से कह कर
पचहत्तर फुट ऊँचा फाँसी देने का एक खम्भा बनवाओ!
जिस पर उसे लटकाया जाये! फिर प्रात:काल राजा से
कहो कि वह मोर्दकै को उस पर लटका दे। फिर राजा
के साथ तुम भोज पर जाना और आनन्द से रहना।"

हामान को यह सुझाव अच्छा लगा। सो उसने फाँसी
का खम्भा बनवाने के लिए किसी को आदेश दे दिया।

मोर्दकै का सम्मान

6 उस रात राजा सो नहीं पाया। सो उसने अपने एक
दास से इतिहास की पुस्तक लाकर अपने सामने
उसे पढ़ने को कहा। (राजाओं के इतिहास की पुस्तक
में वह सब कुछ अंकित रहता हैं जो एक राजा के
शासनकाल के दौरान घटित होता है।) 2सो उस दास ने
राजा के लिए वह पुस्तक पढ़ी। उसने महाराजा क्षयर्ष
को मार डालने के षड़यन्त्र के बारे में पढ़ा। बिगताना
और तेरेश के षड़यन्त्रों का पता मोर्दकै को चला था।
ये दोनों ही व्यक्ति द्वार की रक्षा करने वाले राजा के
हाकिम थे। उन्होंने राजा की हत्या की योजना बनाई
थी किन्तु मोर्दकै को इस योजना का पता चल गया था
और उसने उसके बारे में किसी को बता दिया था।

3इस पर महाराजा ने प्रश्न किया, "इस बात के
लिए मोर्दकै को कौन सा आदर और कौन सी उत्तम
वस्तुएं प्रदान की गयी थीं?"

उन दासों ने राजा को उत्तर दिया, "मोर्दकै के लिये
कुछ नहीं किया गया था।"

4उसी समय राजा के महल के बाहरी आँगन में
हामान ने प्रवेश किया। वह, हामान ने फाँसी का जो
खम्भा बनावाया था, उस पर मोर्दकै को लटकवाने
के लिये राजा से कहने को आया था। राजा ने उसकी
आहट सुन कर पूछा, "अभी अभी आँगन में कौन
आया है?"

5राजा के सेवकों ने उत्तर दिया, "आँगन में हामान
खड़ा हुआ है।"

सो राजा ने कहा, "उसे भीतर ले आओ।"

6हामान जब भीतर आया तो राजा ने उससे एक प्रश्न
पूछा, "हामान, राजा यदि किसी को आदर देना चाहे तो
उस व्यक्ति के लिए राजा को क्या करना चाहिए?"

हामान ने अपने मन में सोचा, "ऐसा कौन हो सकता
है जिसे राजा मुझसे अधिक आदर देना चाहता होगा?
राजा निश्चय ही मुझे आदर देने के लिये ही बात कर
रहा होगा।"

7सो हामान ने उत्तर देते हुए राजा से कहा, "राजा जिसे
आदर देना चाहता है, उस व्यक्ति के साथ वह ऐसा करे:
8राजा ने जो वस्त्र स्वयं पहना हो, उसी विशेष वस्त्र को तू
अपने सेवकों से मंगवा लिया जाये और उस घोड़े को भी
मंगवा लिया जाये जिस पर राजा ने स्वयं सवारी की हो।
फिर सेवकों के द्वारा उस घोड़े के सिर पर राजा का
विशेष चिन्ह अंकित कराया जाये। 9इसके बाद राजा के
किसी अत्यन्त महत्वपूर्ण मुखिया को उस वस्त्र और घोड़े
का अधिकारी नियुक्त किया जाये। फिर वह अधिकारी
उस व्यक्ति को, जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है,
उस वस्त्र को पहनाये और फिर इसके बाद वह अधिकारी
उस घोड़े के आगे–आगे चलता हुआ उसे नगर की गलियों
के बीच से गुजारे। वह अपनी अगुवाई में घोड़े को ले जाते
हुए यह घोषणा करता जाये, 'यह उस व्यक्ति के लिये
किया गया है, राजा जिसे आदर देना चाहता है।'"

10राजा ने हामान को आदेश दिया, "तुम तत्काल
चले जाओ तथा वस्त्र और घोड़ा लेकर यहूदी मोर्दकै
के लिए वैसा ही करो, जैसा तुमने सुझाव दिया है।
मोर्दकै राजद्वार के पास बैठा है। जो कुछ तुमने सुझाया
है, सब कुछ वैसा ही करना।"

11सो हामान ने वस्त्र और घोड़ा लिया और वस्त्र
मोर्दकै को पहना कर घोड़े पर चढ़ा कर नगर की
गलियों से होते हुए घोड़े के आगे आगे चल दिया।
मोर्दकै के आगे आगे चलता हुआ हामान घोषणा कर
रहा था, "यह सब उस व्यक्ति के लिये किया गया है,
जिसे राजा आदर देना चाहता है!"

12इसके बाद मोर्दकै फिर राजद्वार पर चला गया
किन्तु हामान तुरन्त अपने घर की ओर चल दिया।
उसने अपना सिर छुपाया हुआ था क्योंकि वह परेशान
और लज्जित था। 13इसके बाद हामान ने अपनी पत्नी
जेरेश और अपने सभी मित्रों से, जो कुछ घटा था,
सब कुछ कह सुनाया। हामान की पत्नी और उसके
सलाहकारों ने उससे कहा, "यदि मोर्दकै यहूदी है, तो
तुम जीत नहीं सकते। तुम्हारा पतन शुरु हो चुका है।
तुम निश्चय ही नष्ट हो जाओगे!"

14अभी वे लोग हामान से बात कर रही रहे थे कि
राजा के खोजे हामान के घर पर आये और तत्काल
ही हामान को एस्तेर के भोज में बुला ले गये।

हामान को प्राण–दण्ड

7 फिर राजा और हामान महारानी एस्तेर के साथ
भोजन करने के लिये चले गये। 2इसके बाद जब
वे दूसरे दिन के भोज में दाखमधु पी रहे थे तो राजा ने
एस्तेर से फिर एक प्रश्न किया, "महारानी एस्तेर, तुम
मुझ से क्या माँगना चाहती हो? जो कुछ तुम मांगोगी,
पाओगी। बताओ तुम्हें क्या चाहिए? मैं तुम्हें कुछ भी दे
सकता हूँ। यहाँ तक कि मेरा आधा राज्य भी।"

3इस पर महारानी एस्तेर ने जवाब दिया, "हे महाराज!
यदि मैं तुम्हें भाती तुम्हारी कृपा पात्र हूँ और यदि यह
तुम्हें अच्छा लगता हो तो कृपा करके मुझे जीने दीजिये
और मैं तुमसे यह चाहती हूँ कि मेरे लोगों को भी जीने
दीजिये! बस मैं यही माँगती हूँ। 4ऐसा मैं इसलिये चाहती
हूँ कि मुझे और मेरे लोगों को विनाश, हत्या और पूरी
तरह से नष्ट कर डालने के लिए बेच डाला गया है।
यदि हमें दासों के रूप में बेचा जाता, तो मैं कुछ नहीं
कहती क्योंकि वह कोई इतनी बड़ी समस्या नहीं होती
जिसके लिये राजा को कष्ट दिया जाता।"

5इस पर महाराजा क्षयर्ष ने महारानी एस्तेर से पूछा,
"तुम्हारे साथ ऐसा किसने किया? कहाँ है वह व्यक्ति
जिसने तुम्हारे लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करने की
हिम्मत की?"

6एस्तेर ने कहा, "हमारा विरोधी और हमारा शत्रु
यह दुष्ट हामान ही है।"

तब हामान राजा और रानी के सामने आतंकित हो
उठा। 7राजा बहुत क्रोधित था। वह खड़ा हुआ। उसने
अपना दाखमधु वहीं छोड़ दिया और बाहर बगीचे में चला
गया। किन्तु हामान, रानी एस्तेर से अपने प्राणों की
भीख माँगने के लिए भीतर ही ठहरा रहा। हामान यह
जानता था कि राजा ने उसके प्राण लेने का निश्चय कर
लिया है। इसलिये वह अपने प्राणों की भीख माँगता रहा।
8राजा जैसे ही बगीचे से भोज के कमरे की ओर वापस

आ रहा था, तो वह क्या देखता है कि जिस बिछौने पर एस्तेर लेटी है, उस पर हामान झुका हुआ है। राजा ने क्रोध भरे स्वर में कहा, "अरे, क्या तू महल में मेरे रहते हुए ही महारानी पर आक्रमण करेगा?"

जैसे ही राजा के मुख से ये शब्द निकले, राजा के सेवकों ने भीतर आ कर हामान का मुँह ढंक दिया।
9राजा के एक खोजे सेवक ने जिसका नाम हर्बोना था, कहा, "हामान के घर के पास पचहत्तर फुट लम्बा फाँसी देने का एक खम्भा बनाया गया है। हामान ने यह खम्भा मोर्दकै को फाँसी पर चढ़ाने के लिये बनाया था। मोर्दकै वही व्यक्ति है जिसने तुम्हारी हत्या के षड़यन्त्र को बताकर तुम्हारी सहायता की थी।"

राजा बोला, "उस खम्भे पर हामान को लटका दिया जाये!"

10 सो उन्होंने उसी खम्भे पर जिसे उसने मोर्दकै के लिए बनाया था हामान को लटका दिया। इसके बाद राजा ने क्रोध करना छोड़ दिया।

यहूदियों की मदद के लिये राजा का आदेश

8 उसी दिन महाराजा क्षयर्ष ने यहूदियों के शत्रु हामान के पास जो कुछ था, वह सब महारानी एस्तेर को दे दिया। एस्तेर ने राजा को बता दिया कि मोर्दकै रिश्ते में उसका भाई लगता है। इसके बाद मोर्दकै राजा से मिलने आया। 2राजा ने हामान से अपनी जो अँगूठी वापस ले ली थी, उसे अपनी अँगुली से निकाल कर मोर्दकै को दे दिया। इसके बाद एस्तेर ने मोर्दकै को हामान की सारी सम्पत्ति का अधिकारी नियुक्त कर दिया।

3तब एस्तेर ने राजा से फिर कहा और वह राजा के पैरों में गिर कर रोने लगी। उसने राजा से प्रार्थना की कि वह अगागी हामान की उस बुरी योजना को समाप्त कर दे जिसे हामान ने यहूदियों के नाश के लिए सोचा था।

4इस पर राजा ने अपने सोने के राजदण्ड को एस्तेर की ओर आगे बढ़ाया। एस्तेर उठी और राजा के आगे खड़ी हो गयी। 5फिर एस्तेर ने कहा, "महाराज, यदि तुम मुझे पसंद करते हो और यह तुम्हें अच्छा लगता है तो कृपा करके मेरे लिए यह कर दीजिये। यदि आपको यह किया जाना ठीक लगे तो इसे पूरा कर दीजिये। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा करके एक आदेश पत्र लिखिये, जो उस आदेश पत्र को रद्द कर दे जिसे हामान ने भेजा था। अगागी हामान ने राजा के सभी प्रांतों में बसे यहूदियों को नष्ट करने की एक योजना सोची थी और उस योजना को क्रियान्वित करने के लिए उसने आज्ञा पत्र भिजवा दिये थे। 6मैं महाराज से यह प्रार्थना इसलिए कर रही हूँ कि मैं अपने लोगों के साथ उस भयानक काण्ड को घटते देखना सहन नहीं कर पाऊँगी। मैं अपने परिवार की हत्या को देखना सहन नहीं कर पाऊँगी।"

7महाराजा क्षयर्ष ने महारानी एस्तेर और यहूदी मोर्दकै को उत्तर देते हुए जो कहा था, वह यह है, "हामान, क्योंकि यहूदियों के विरोध में था, इसलिए उसकी सम्पत्ति मैंने एस्तेर को दे दी तथा मेरे सिपाहियों ने उसे फाँसी देने के खम्भे पर लटका दिया। 8अब राजा की ओर से एक और दूसरा आज्ञा पत्र लिखा जाये। इसे तुम्हें यहूदियों की सहायता के लिए जो सबसे अच्छा लगे वैसा ही लिखो। फिर राजा की विशेष अँगूठी से उस आज्ञा पर मुहर लगा दो। राजा की ओर से लिखा गया और राजा की अँगूठी से जिस पर मुहर दी गयी हो, ऐसा कोई भी राजकीय पत्र रद्द नहीं किया जा सकता।"

9राजा के सचिवों को तत्काल बुलाया गया। सीवान नाम के तीसरे महीने की तेईसवीं तारीख को वह आदेश पत्र लिखा गया। यहूदियों के लिये मोर्दकै के सभी आदेशों को सचिवों ने लिखकर यहूदियों, मुखियाओं, राज्यपालों और एक सौ सत्ताईस प्रांतों के अधिकारियों के पास पहुँचा दिया। ये प्रांत भारत से लेकर कूश तक फैले हुए थे। ये आदेश पत्र हर प्रांत की लिपि और भाषा में लिखे गये थे और हर देश के लोगों की भाषा में उसका अनुवाद किया गया था। यहूदियों के लिये ये आदेश उन की अपनी भाषा और उनकी अपनी लिपि में लिखे गये थे। 10मोर्दकै ने ये आदेश महाराजा क्षयर्ष की ओर से लिखे थे और फिर उन पत्रों पर उसने राजा की अँगूठी से मुहर लगा दी थी। फिर उन पत्रों को उसने तीव्र घुड़सवार सन्देश वाहकों के द्वारा भिजवा दिया। ये सन्देश वाहक उन घोड़ों पर सवार थे जिन्हें विशेष राजा के लिए पाला–पोसा गया था।

11उन पत्रों पर राजा के ये आदेश लिखे थे:

यहूदियों को हर नगर में आपस में एक जुट होकर अपनी रक्षा करने का अधिकार है। उन्हें अधिकार है कि वे किसी भी प्रांत और समूह के लोगों की ऐसी किसी भी सेना को छिन्न–भिन्न कर दें, मार डालें अथवा पूरी तरह

नष्ट कर दें जो उन पर, उनकी स्त्रियों पर, और उनके बच्चों पर आक्रमण कर रही हो। यहूदियों को अधिकार है कि वे अपने शत्रुओं की सम्पत्ति को ले लें और उसे नष्ट कर डालें।

12जब यहूदियों के लिये ऐसा किया जायेगा, उसके लिये उदार नाम के बारहवें महीने की तेरहवीं तारीख का दिन निश्चित किया गया। महाराजा क्षयर्ष के अपने सभी प्रांतों में यहूदियों को ऐसा करने की अनुमति दे दी गयी। 13इस पत्र की एक प्रति राजा के आदेश के साथ हर प्रांत को बाहर भेजी जानी थी। यह एक नियम बन गया। हर प्रांत में इसने नियम का रुप ले लिया। राज्य में रहने वाली प्रत्येक जाति के लोगों के बीच इसका प्रचार किया गया। उन्होंने ऐसा इसलिये किया जिससे उस विशेष दिन के लिये यहूदी तैयार हो जायें जब यहूदियों को अपने शत्रुओं से बदला लेने की अनुमति दे दी जाएगी। 14राजा के घोड़ों पर सवार संदेश वाहक जल्दी से बाहर निकल गये। उन्हें राजा ने आज्ञा दी थी कि जल्दी करें। वह आज्ञा शूशन की राजधानी नगरी में भी लगा दी गयी।

15फिर मोर्दकै राजा के पास से चला गया। मोर्दकै ने राजा से प्राप्त वस्त्र धारण किये हुए थे। उसके कपड़े नीले और सफेद रंग के थे। उसने एक लम्बा सोने का मुकुट पहन रखा था। बढ़िया सूत का बना हुआ बैंगनी रंग का चोगा भी उसके पास था। शूशन की राजधानी नगरी में विशेष समारोह हो रहा था। लोग बहुत खुश थे। 16यहूदियों के लिये तो यह विशेष प्रसन्नता का दिन था। यह आनन्द, प्रसन्नता और बड़े सम्मान का दिन था।

17जहाँ कहीं भी किसी प्रांत या किसी भी नगर में राजा का वह आदेश पत्र पहुँचा, यहूदियों में आनन्द और प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। यहूदी भोज दे रहे थे और उत्सव मना रहे थे और दूसरे बहुत से सामान्य लोग यहूदी बन गये। क्योंकि वे यहूदियों से बहुत डरा करते थे, इसीलिए उन्होंने ऐसा किया।

यहूदियों की विजय

9 लोगों को अदार नाम के बारहवें महीने की तेरह तारीख को राजा की आज्ञा को पूरा करना था। यह वही दिन था जिस दिन यहूदियों के विरोधियों को उन्हें पराजित करने की आशा थी। किन्तु अब तो स्थिति बदल चुकी थी। अब तो यहूदी अपने उन शत्रुओं से अधिक प्रबल थे जो उन्हें घृणा किया करते थे। 2महाराजा क्षयर्ष के सभी प्रांतों के नगरों में यहूदी परस्पर एकत्र हुए। यहूदी आपस में इसलिए एकजुट हो गये कि जो लोग उन्हें नष्ट करना चाहते हैं, उन पर आक्रमण करने के लिये वे पर्याप्त सशस्त्र हो जायें। इस प्रकार उनके विरोध में कोई भी अधिक शक्तिशाली नहीं रहा। लोग यहूदियों से डरने लगे। 3प्रांतों के सभी हाकिम, मुखिया, राज्यपाल और राजा के प्रबन्ध अधिकारी यहूदियों की सहायता करने लगे। वे सभी अधिकारी यहूदियों की सहायता इसलिए किया करते थे कि वे मोर्दकै से डरते थे। 4राजा के महल में मोर्दकै एक अति महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया। सभी प्रांतों में हर कोई उसका नाम जानता था और जानता था कि वह कितना महत्वपूर्ण है। सो मोर्दकै अधिक शक्तिशाली होता चला गया।

5यहूदियों ने अपने सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया। अपने शत्रुओं को मारने और नष्ट करने के लिए वे तलवारों का प्रयोग किया करते थे। जो लोग यहूदियों से घृणा किया करते थे, उनके साथ यहूदी जैसा चाहते, वैसा व्यवहार करते। 6शूशन की राजधानी नगरी में यहूदियों ने पाँच सौ लोगों को मार कर नष्ट कर दिया। 7यहूदियों ने जिन लोगों की हत्या की थी उनमें ये लोग भी शामिल थे: पर्शन्दाता, दल्पोन, अस्पाता, 8पोराता, अदल्या, अरीदाता, 9पर्मशता, अरीसै, अरीदै और वैजाता। 10ये दस लोग हामान के पुत्र थे। हम्मदाता का पुत्र हामान यहूदियों का बैरी था। यहूदियों ने उन सभी पुरूषों को मार तो दिया किन्तु उन्होंने उनकी सम्पत्ति नहीं ली।

11जब राजा ने शूशन की राजधानी नगरी में मारे गये पाँच सौ व्यक्तियों के बारे में सुना तो 12उसने महारानी एस्तेर से कहा, "शूशन नगर में यहूदियों ने पाँच सौ व्यक्तियों को मार डाला है तथा उन्होंने शूशन में हामान के दस पुत्रों की भी हत्या कर दी है। कौन जाने राजा के अन्य प्रांतों में क्या हो रहा है? अब मुझे बताओ तुम और क्या कराना चाहती हो? जो कहो मैं उसे पूरा कर दूँगा।"

13एस्तेर ने कहा, "यदि ऐसा करने के लिये महाराज प्रसन्न हैं तो यहूदियों को यह करने की अनुमति दी जाये: शूशन में कल भी यहूदियों को राजा की आज्ञा पूरी करने दी जाये, और हामान के दसों पुत्रों को फाँसी के खम्भे पर लटका दिया जाये।"

14सो राजा ने यह आदेश दे दिया कि शूशन में
कल भी राजा का यह आदेश लागू रहे और उन्होंने
हामान के दसों पुत्रों को फाँसी पर लटका दिया।
15आदार महीने की चौदहवीं तारीख को शूशन में
यहूदी एकत्रित हुए। फिर उन्होंने वहाँ तीन सौ पुरुषों
को मौत के घाट उतार दिया किन्तु उन्होंने उन तीन
सौ लोगों की सम्पत्ति को नहीं लिया।
16उसी अवसर पर राजा के अन्य प्रांतों में रहने
वाले यहूदी भी परस्पर एकत्र हुए। वे इसलिए एकत्र
हुए कि अपना बचाव करने के लिये वे पर्याप्त बलशाली
हो जायें और इस तरह उन्होंने अपने शत्रुओं से छुटकारा
पा लिया। यहूदियों ने अपने पचहत्तर हजार शत्रुओं को
मौत के घाट उतार दिया। किन्तु उन्होंने जिन शत्रुओं
की हत्या की थी, उनकी किसी भी वस्तु को ग्रहण
नहीं किया। 17यह अदार नाम के महीने की तेरहवीं
तारीख को हुआ और फिर चौदहवीं तारीख़ को यहूदियों
ने विश्राम किया। यहूदियों ने उस दिन को एक खुशी
भरे छुट्टी के दिन के रूप में बना दिया।

पूरीम का त्यौहार

18आदार महीने की तेरहवीं तारीख़ को शूशन में
यहूदी परस्पर एकत्र हुए। फिर पन्द्रहवीं तारीख़ को
उन्होंने विश्राम किया। उन्होंने पन्द्रहवीं तारीख़ को
फिर एक खुशी भरी छुट्टी का दिन बना दिया। 19इसी
कारण उस ग्राम्य प्रदेश के छोटे छोटे गाँवों में रहने
वाले यहूदियों ने चौदहवीं तारीख़ को खुशियों भरी
छुट्टी के रूप में रखा। उस दिन उन्होंने आपस में
एक दूसरे को भोज दिये।
20जो कुछ घटा था, उसकी हर बात को मोर्दकै ने
लिख लिया और फिर उसे महाराजा क्षयर्ष के सभी
प्रांतों में बसे यहूदियों को एक पत्र के रूप में भेज
दिया। दूर–पास सब कहीं उसने पत्र भेजें। 21मोर्दकै ने
यहूदियों को यह बताने के लिए ऐसा किया कि वे हर
साल अदार महीने की चौदहवीं और पन्द्रहवीं तारीख़
को पूरीम का उत्सव मनाया करें। 22यहूदियों को इन
दिनों को पर्व के रुप में इसलिए मनाना था कि उन्हीं
दिनों यहूदियों ने अपने शत्रुओं से छुटकारा पाया था।
उन्हें उस महीने को इसलिए भी मनाना था कि यही
वह महीना था जब उनका दुःख उनके आनन्द में
बदल गया था। वही यह महीना था जब उनका रोना–धोना
एक उत्सव के दिन के रूप में बदल गया था। मोर्दकै ने
सभी यहूदियों को पत्र लिखा। उसने उन लोगों से कहा
कि वे उन दिनों को उत्सव के रुप में मनाएं। यह समय
एक ऐसा समय हो जब लोग आपस में एक दूसरे को
उत्तम भोजन अर्पित करें तथा गरीब लोगों को उपहार दें।
23इस प्रकार मोर्दकै ने यहूदियों को जो लिखा था,
वे उसे मानने को तैयार हो गये। वे इस बात पर सहमत
हो गये कि उन्होंने जिस उत्सव का आरम्भ किया है,
वे उसे मनाते रहेंगे।
24हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान यहूदियों का
शत्रु था। उसने यहूदियों के विनाश के लिए एक षड़यन्त्र
रचा था। हामान ने यहूदियों को नष्ट और बर्बाद कर
डालने के लिए कोई एक दिन निश्चित करने के
वास्ते पासा भी फेंका था। उन दिनों इस पासे को
"पुर" कहा जाता था। इसीलिए इस उत्सव का नाम
"पूरीम" रखा गया। 25किन्तु एस्तेर राजा के पास गयी
और उसने उससे बातचीत की। इसीलिये राजा ने नये
आदेश जारी कर दिये। यहूदियों के विरुद्ध हामान ने
जो षड़यन्त्र रचा था, उसे रोकने के लिये राजा ने
अपने आदेश पत्र जारी किये। राजा ने उन ही बुरी
बातों को हामान और उसके परिवार के साथ घटा
दिया। उन आदेशों में कहा गया था कि हामान और
उसके पुत्रों को फाँसी पर लटका दिया जाये।
26–27इसलिये ये दिन "पूरीम" कहलाये। "पूरीम" नाम
'पुर' शब्द से बना है (जिसका अर्थ है लाटरी) और
इसलिए यहूदियों ने हर वर्ष इन दो दिनों को उत्सव के
रुप में मनाने की शुरुआत करने का निश्चय किया।
उन्होंने यह इसलिए किया ताकि अपने साथ होते हुए जो
बातें उन्होंने देखी थी, उन्हें याद रखने में उनको मदद
मिले। यहूदियों और उन दूसरे सभी लोगों को, जो यहूदियों
में आ मिले थे, हर साल इन दो दिनों को ठीक उसी रीति
और उसी समय मनाना था जिसका निर्देश मोर्दकै ने
अपने आदेश–पत्र में किया था। 28ये दो दिन हर पीढ़ी
को और हर परिवार को याद रखने चाहिए और मनाये
जाना चाहिए। इन्हें हर प्रांत और हर नगर में निश्चयपूर्वक
मनाया जाना चाहिए। यहूदियों को इन्हें मनाना कभी
नहीं छोड़ना चाहिए। यहूदियों के वंशजों को चाहिए कि
वे पूरीम के इन दो दिनों को मनाना सदा याद रखें।

[29]पूरीम के बारे में सुनिश्चित करने के लिये महारानी
एस्तेर और यहूदी मोर्दकै ने यह दूसरा पत्र लिखा। एस्तेर
अबीहैल की पुत्री थी। वह पत्र सच्चा था, इसे प्रमाणित
करने के लिये उन्होंने इसे राजा के सम्पूर्ण अधिकार के
साथ लिखा। [30]सो महाराजा क्षयर्ष के राज्य के एक सौ
सत्ताईस प्रांतों में सभी यहूदियों के पास मोर्दकै ने पत्र
भिजवाये। मोर्दकै ने शांति और सत्य का एक सन्देश
लिखा। [31]मोर्दकै ने पूरीम के उत्सव को शुरु करने के
बारे में लिखा। इन दिनों को उनके निश्चित समय पर ही
मनाया जाना था। यहूदी मोर्दकै और महारानी एस्तेर ने
इन दो दिन के उत्सव को अपने लिये और अपनी संतानों
के लिए निर्धारित किया। उन्होंने ये दो दिन निश्चित किये
ताकि यहूदी उपवास और विलाप करें। [32]एस्तेर के पत्र
ने पूरीम के विषय में इन नियमों की स्थापना की और
पूरीम के इन नियमों को पुस्तकों में लिख दिया गया।

मोर्दकै का सम्मान

10 महाराजा क्षयर्ष ने लोगों पर कर लगाये। राज्य
के सभी लोगों, यहाँ तक कि सागर तट के
सुदूर नगरों को भी कर चुकाने पड़ते थे। [2]राजा क्षयर्ष ने
जो महान कार्य अपनी शक्ति और सामर्थ्य से किये थे वे
"मादै और फारस के राजाओं की इतिहास" की पुस्तक
में लिखे हैं। उन 'इतिहास की पुस्तकों' में मोर्दकै ने जो
कुछ किया था, वह सब कुछ भी लिखा है। राजा ने
मोर्दकै को एक महान व्यक्ति बना दिया। [3]महाराजा क्षयर्ष
के यहाँ यहूदी मोर्दकै महत्व की दृष्टि से दूसरे स्थान पर
था। मोर्दकै यहूदियों में अत्यन्त महत्वपूर्ण पुरुष था। तथा
उसके साथी यहूदी उसका बहुत आदर करते थे। वे
मोर्दकै का आदर इसलिए करते थे कि उसने अपने
लोगों के भले के लिए काम किया था। मोर्दकै सभी
यहूदियों के कल्याण की बातें किया करता था।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html